आओ खेलें फाग

सहेलियों का
तुम्हारा नाम ले ले कर छेड़ना,
और उसका वो शर्म से
लाल हो जाना..

बस तुम्हारे नाम से
यूँ शर्म से लाल हुए
चेहरे की थोड़ी सी लाली
वो बचा के रखी थी
अपने मन के संदूक में
खामोशी का ताला लगाकर,
ताकि रंग सके
तुम्हारे मन का कोई कोना
हमेशा के लिए..

तब..
जब ..
दूर दूर तक
जंगल दहक रहें होंगे, और
खिले -खिले पलाश की
लगी होगी आग...

जब...
चारों ओर टपक रहे
महुआ के गंध से
मन भर रहा होगा और
महक रही होगी सांस

जब ..
फगुआ गा रही होगी
भाभियों की टोली और
हवा में तैर रहा होगा कोई
रंगीला सा राग

जब ..
सहेलियां
घोल रही होगी टेसू का रंग
और चुपके से मिला रही होगी
थोडी सी भंग..

जब ..
अचानक से दोनों
हाथों में रंग लिये उसे
अचंभित से कर दोगे और ..
..मन मे भर अनुराग ..
जब तुम उससे कहोगे..
..आओ खेलें फाग...!

डॉ0 रजनी गुप्ता